Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 01, No. 06, August. 2024

कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में प्रेम–संवेदना

शोभित कुमार ♣
शोधार्थी
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज
शाहजहाँपुर उत्तर प्रदेश
एवम
प्रो. आलोक मिश्र
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज
शाहजहाँपुर उत्तर प्रदेश

सारांश

प्रेम व्यक्ति के मन का सबसे कोमल और निज से जुड़ा हुआ मनोभाव है, जो केवल मानव तक सीमित नहीं है, बल्कि इस संसार के समस्त जीवों में भी विद्यमान है। प्रेम में व्यक्तित्व की गहराई और दूसरे के प्रति समर्पण का भाव स्पष्ट रूप से दिखायी देता है। ग़ज़ल का मूल स्वर शृंगार परक रहा है, जिसमें शृंगार का स्थायी भाव 'रति' अर्थात् प्रेम है। डॉ. कुँअर बेचैन के अनुसार ग़ज़ल की उत्पत्ति में अरबी शायरों की परम्परा का प्रभाव है, जिसमें प्रारंभिक कसीदे शृंगारिकता से भरे होते थे। प्रेम के दो रूप—लौकिक और पारलौकिक होते हैं, लेकिन ग़ज़लों में मुख्यतः लौकिक प्रेम की ही अभिव्यक्ति मिलती है। हिन्दी के ग़ज़लकारों की रचनाओं में प्रेम के संयोग और वियोग दोनों ही पक्ष दृष्टिगोचर होते हैं। कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में वियोग जनित प्रेम के मार्मिक चित्र अधिक प्रभावी हैं। उनकी ग़ज़लों में प्रेम की अभिव्यक्ति में शुद्ध सात्विकता, उदात्तता, और गहनता का अनुभव होता है। उनके प्रेम का स्वरूप रीतिकाल के कवियों के समान विलासी और भोगवादी नहीं, बल्कि एक शाश्वत और जीवन की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में परिलक्षित होता है।

कूट शब्द: प्रेम, शृंगार, लौकिक और पारलौकिक प्रेम, संयोग और वियोग, कुँअर बेचैन

प्रेम व्यक्ति के मन का सबसे कोमल मनोभाव होने के साथ ही उसके निज से सबसे अधिक जुड़ा हुआ है। प्रेम की सत्ता केवल मानव मात्र में ही दिखायी नहीं देती, बल्कि इस संसार के समस्त चराचर प्राणी और जीव इस प्रेम के बन्धन में पूरी तरह आबद्ध हैं। प्रेम में जितनी व्यक्ति परकता दिखायी देती है उतनी दूसरे किसी मनोभाव में नहीं। ग़ज़ल का मूल और

♣ Author: Shobhi Kumar & Prof. Alok Mishra
Email: shobhitspn4@gmail.com
Received 03 Aug 2024; Accepted 18 Aug 2024. Available online: 30 Aug 2024.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

आदि स्वर शृंगार परक रहा है। शृंगार का स्थायी भाव 'रति' अर्थात् प्रेम है। ग़ज़ल—साहित्य में इसी प्रकार और गहन अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। डॉ0 कुँबर बेचैन ने ग़ज़ल के प्रादुर्भाव पर विचार करते हुए लिखा है—— ''अरबी के शायर प्रायः अपने बादशाहों की प्रशस्ति में कसीदे लिखते थे, जिसका प्रारम्भिक अंश परकता और शृंगारिकता के भाव से लवालव भरा होता था।1

प्रेम के दो रूप हैं—— लौकिक और पारलौकिक। ग़ज़लों में अधिकांशतः लौकिक प्रेम की ही लौकिक नायक—नायिकाओं की लौकिक प्रेमानुभूतियों की ही अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। वैसे भी ग़ज़ल का अर्थ ''प्रेमिका से वार्तालाप'' करना अधिक सटीक लगता है। ''प्रेमिका से वार्तालाप'' में प्रेम के दूसरे रूपों— स्नेह, वात्सल्य, भक्ति इन सबकों स्थान कहाँ? वहाँ तो प्रेम केवल शारीरिक सम्बन्धों तक ही सीमित है। यही कारण है कि ग़ज़लों में प्रेम के लौकिक रूप की ही अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। हिन्दी के ग़ज़लकारों की ग़ज़लों में प्रेम के दोनों ही पक्ष – संयाग और वियोग की स्थिति को देखा जा सकता है। कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में भी अनेक स्थानों पर संयोग और वियोग जनित प्रेम की बड़ी सहज और मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है, तथापि उनकी ग़ज़लों में वियोग जनित के जितने मार्मिक चित्र देखने को मिलते हैं, उनमें संयोग जनित स्थिति के नहीं।

प्रेम में मिलन की इच्छा और उत्कंठा प्रत्येक हृदय में रहती है, मन जिसे प्रेम करता है, जिन्दगी का हर पल उसी के इर्द—गिर्द, उसी के पहलू में बिताना चाहता है। उसके मिलन से जीवन में सार्थकता महसूस होती है और उस प्रियतम के बिछुड़ जाने पर जीवन निरर्थक सा लगने लगता है। वियोग के क्षणों में प्रेमी मन हर पल अपने प्रियतम की स्थिति में डूबे रहता चाहता है। एक स्थिति यह होती है कि प्रियतम में डूबते—डूबते᾽ यक्ति स्वयं को खो बैठता है। इसी भाव की मार्मिक अभिव्यक्ति डॉ0 कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़ल के चन्द शेरों में इस प्रकार की है——

जबसे नजरों में कोई समाया लगा,

मैं भी अपने को कितना पराया लगा।

जिन्दगी के बिलकती कड़ी धूप में,

जब ख्याल आया उनको तो साया लगा।।2

Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 01, No. 06, August. 2024

प्रेम की इस विभारता और तन्मयता को कुँअर बेचैन ने अपनी अनेक ग़ज़लों में दर्शाया है, प्रियतम जब नजदीक होता है तो अपना मन न जाने कहाँ खो जाता है, इस भाव को कुँअर बेचैन इन शब्दों में व्यक्त करते हैं––

कौन सी झील में नहाते हो,

सुनते हैं तुम कमल खिलाते हो।

मुझको कर देते हो जुदा मुझसे,

जब भी मेरे करीब आते हो।।3

प्रियतमा से मिलन के एहसास को डॉ0 कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़ल के इन शेरों में कितनी खूबसूरती से व्यक्त किया है––

अपने मन में ही अचानक यूँ सजल हो जायेंगे,

क्या खबर थी आपसे मिलकर ग़ज़ल हो जायेंगे।

यह किसे मालूम था वो वक्त भी आ जायेगा,

आप मेरी जिन्दगी के राशिफल हो जायेंगे।

भोर की पहली किरण बनकर जरा छू दीजिए,

आपकी सौगन्ध हम खिलकर कमल हो जायेंगे।

इस मरुस्थल की तरफ बादल कभी तो भेजिए,

झील में हम झिलमिलाते जल महल हो जायेंगे।।4

सौन्दर्य–चित्रण भी ग़ज़ल की एक विषेष भाव भूमि रही है। ग़ज़लकारों ने सौन्दर्य–चित्रण के अन्तर्गत नायिकाओं के शरीर के विभिन्न अंग–प्रत्यंगो की मनोरम झाकियाँ प्रस्तुत की है। डॉ0 कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल के इस शेर में अपनी प्रियतमा के नेत्रों की सुन्दरता का सर्वथा एक नवीन रूप और चित्र प्रस्तुत करते है––

प्रष्न पत्रों की तरह मिलने लगी है ज़िन्दगी,

आपकी नजरें उठें, सब प्रष्न हल ही हो जायेगें।5

प्रियतम प्रत्येक पल अपनी प्रियतमा को अपने हृदय में संजोए रखना चाहता है क्योंकि उसी में उसे अपनी ज़िन्दगी की खुषी अनुभव होती है। कुँअर बेचैन के मतानुसार जीवन अनेक प्रकार के कष्टों और कडुवाहाटों से भरा हुआ है जीवन में चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा है, इस अन्धेरेपर को मिटाने के लिए एक ही रास्ता है, कि प्रियतमा की इच्छा भी रात दिन उसके हृदय में डोलती रहे––

हो सके तो दिल में मेंरे डोलते रहिए जरा,

होले–होले ही सही पर बोलते रहिए जरा।

दूर तक गहरा अन्धेरा और काली रात है,

आप ही ऐसे में अमृत घोलते रहिए जरा।

एक मोती की तरह फिर आँख तक आया हूँ मै,

अश्क हूँ, पलकों पे अपनी तौलते रहिए जरा,

यह कसैलापन, यह कड़वाहट न पी जाये मुझे,

आप ही मुझमें अमृत घोलते रहिए जरा।

खो गया आप में, तो मिल भी जाऊँगा कभी,

अपनी यादों में मुझे भी रोलते रहिए जरा।

क्या पता कब लौट आएं फिर बही रूठे चरण,

इन्तजारों का महावर घोलते रहिए जरा।6

वियेग की स्थिति में जो प्रियतमा की स्मृति जीवन जीने का एक मात्र सहारा रह जाती है। यादों की दुनियाँ खोए रहकर रात–दिन, तिल–तिल टूट–टूट कर जीने के अलावा कुछ और शेष नही रह जाता। प्रियतमा के अलावा की बातें जो मिलन के क्षणों में मन को सुख दिया करती थी, वियोग की स्थिति में रुलाती रहती है। स्मृति का एक क्षण कितना अमूल्य होता है कि उस क्षण प्रियतमा के अलावा कुछ और दिखायी ही नही देता––

जब तेरी याद में सीने से लगाया मुझको,

याद आकर भी कोई याद न आया मुझको।7

इतना ही नहीं, प्रिय की स्मृति, उसकी विरह की आग में हृदय चंदन के समान दिन–रात सुलगता ही रहता है, आँसू की बूँदे शहद की बूँदो के समान दिखायी देती है––

आती है, मुझको भिगोती है, चली जाती है,

तेरी यादें भी समुंदर की तरंगो–सी है।8

प्रियतमा की स्मृति और उसकी यादें की एक मात्र धरोहर हैं। आलम यह है कि वियग के इन क्षणों में आँखों की नींदें भी चुराकर कोई अपने साथ ले गया––

जो मेरी रोतें मेरी आँखों में आकर ले गयी,

याद तेरी चोर थी नींदे चुराकर ले गयी।

ज़िन्दगी की डायरी में एक ही तो गीत था,

कोई मीठी धुन उसे गुन–गुनाकर ले गयी।9

यादों पर डॉ0 कुँअर बेचैन ने खूब लेखनी चलाई है। संयोग की स्थिति के गीत गानें में उनका मन कदाचित इतना नही डूबा है जिनता कि वियोग जन्य स्थितियों के वर्णन में। वियोग प्रेम की सच्ची कसौटी है। वियोग में ही प्रेम का असली रूप सामने निखर कर आता है। वियोग को आँच में तपाकर प्रेम एक प्रकार से कंचन बनता है। यही कारण है संयोग जन्य स्थितियों की अपेक्षा डॉ0 कुँअर बेचैन ने वियोग जन्य स्थितियों के चित्रण में अपना मन अधिक रमाया है, महाकवि सूर को गोपिकाओं के ''निसि दिन बरसत नैन हमारे'' के समान कुअर बेचैन के नेत्र भी अपनी प्रियतमा की स्थिति में रात–दिन आँसू टपकाते रहते है। यह आँसू केवल पानी के आँसू नहीं बल्कि प्रियतम के विरह में रात–दिन जो वियोगी हृदय जलता रहता है, वही टुकड़े–टुकड़े होकर आँखो के रास्ते आँसुओ के रूप में टपकता रहता है––

आँसुओं की शक्ल की लेकर बारी–बारी आँखो से,

टुकड़ा–टुकड़ा होके निकला दिल हमारी आँख से।10

इतना ही नहीं, आँखों से बहने वाले ये आँसू तीखी शराब बनकर उसके गले में उतरते चले जाते हैं, जिसकी खुमारी कभी आँख से उतरती नहीं––

इस तरह पी है ''कुँअर'' हमने ये आँसू की शराब,

अब उतरती ही नहीं, जिसकी खुमारी आँख से।11

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से ग़ज़ल की पुरानी परम्परा का निर्वाह करते हुए उनमें व्यक्ति जीवन के प्रेम, संयोग और वियोग के अनेक रंग भरे हैं। उनका ग़ज़लों में वियोग जन्य स्थितियों में अनेक मार्मिक और हृदयस्पर्शी झाँकियाँ देखने को मिलती हैं, पाइके के अन्तर्मन को गहराई तक स्पर्श करती हैं। प्रेम जीवन का एक शाश्वत सत्य है, जिसे न कभी झुठलाया गया है और न कभी झुठलाया जा सकता है। यह जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता होने के साथ ही सुखों का मूलभूत आधार भी है। यही कारण है कि अपनी ग़ज़लों में यथार्थ की व्यापक अभिव्यक्ति के साथ ही कुँअर बेचैन प्रेम के मोहरक स्पर्श से अपने आप को बचा नहीं पाये। उनकी ग़ज़लों में प्रेम के जिस स्वरूप के दर्शन होते हैं, वह रीतिकाल के कवियों के समान विलासी और भोग–वृत्ति का सूचक नहीं है बल्कि उसमें एक शुद्ध सात्विकता, उदात्तता, कर्मस्पर्शता और गहनता दिखायी देती है।

संन्दर्भः

1- डॉ कुँअर बेचैन ''शमियाने काँच के'' पृ0 9।

2- डॉ कुँअर बेचैन, रस्सियाँ पानी की, पृ0 22।

3- वही पृ0 38।

4- डॉ कुँअर बेचैन, महावर इंतजारो का, पृ0 31।

5- डॉ कुँअर बेचैन, महावर इंतजारों का, पृ0 31।

6- वही, पृ0 35।

7- वही, पृ0 72।

Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 01, No. 06, August. 2024

8- डॉ कुँअर बेचैन, रस्सियाँ पानी की, पृ0 28।

9- वही, पृ0 34।

10- डॉ कुँअर बेचैन, महावर इंतजारो का, पृ0 25।

11- वही, पृ0 25।